उपसंहार

उपसंहार

समन्वित निष्कर्ष :-

स्वातंत्र्योत्तर 'हिंदी उपन्यास विधा' में 'रेणू' के 'मैलाआंचल' से 'आँचलिक उपन्यास' की नयी धारा प्रवाहित हुई। आठवें दशक तक के हिंदी के 'आँचलिक' उपन्यासों में स्वातंत्र्य प्राप्ती से नयी उमंग लेकर ज्ञान-विज्ञान से प्रभावित आधुनिकता को स्विकारते हुये भारतीय समाज के द्विधा मनस्थिती का चित्रण उसके आँचलिक विशेषताओं को लेकर 'आँचलिक' उपन्यासों में चित्रत होने लगा। परंतु, 25 जून 1975 से 22 मार्च 1977 तक के आपात्काल ने भारतीय समाज को सोचने के लिए बाध्य किया और फिर एक बार समाज में मार्क्सवादी चेतना लेकर जागृत समाज ने आदर्श गांधीवादी समाज निर्मिती का ख़्वाब देखना शुरु किया। 1980 के बाद के आँचलिक उपन्यासों ने ग्रामांचल का चित्रण जरुर किया परंतु साथ ही विकास के नाम पर ग्रामीण समाज को प्रदान विकास योजनाओं के परिणास्वरुप दूरदर्द होती ग्रामीण जीवन की यातनाओं का चित्रण स्पष्ट उजागर होने लगा। 'आँचलिकता' एक तत्व है जो 'अँचल' विशेष के सामाजिक, सांस्कृतिक, रीति-रिवाजों, ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोन को लेकर उभरता है। आज के आंचलिक लेखकों ने भी यह तत्व पकड़कर भारतीय समाज के बदलते ग्रामीण जीवन का अंकन एक कैन्वस के चित्र की तरह चितेरा है, जो विश्व के सामने भारतीय ग्रामीण समाज के बदलते सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजकीय, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत कर रहा है।

आँचलिक उपन्यास में अपेक्षित 'अँचल' का चित्रण करते हुए सामाजिक तथा राष्ट्रीय स्तर पर विकास से कोसो दूर रहे क्षेत्रों पर प्रकाश डालकर विकसित, सभ्य समाज से दूर रही मानवजाती, अपरिचित भू प्रदेश, वहाँ की लोक संस्कृति, जीवन पध्दती-भाषा, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, ऐतिहासिक परिवेश, यथार्थ, आदर्श मान्यताएँ और उनसे प्रभावित मानसिकता से निर्मित मनुष्य समाज की विसंगतियों का 'अँचल' विशेषता के साथ चित्रण करते हुए सुदूर बसे मानवजाती के अभावों और संघर्ष से भरे जीवन को नागरी, सभ्य पाश्चीमात्यिकरण और भौतिक-सुखसुविधा को नयी संस्कृती माननेवालों कों विविधता से संपन्न सुदूर बसे अलग-अलग क्षेत्र के संपन्न भारतीय संस्कृति का परिचय और लोकजीवन को प्रस्तुत करना आंचलिक उपन्यासकरो का उद्देश है। प्रेमचंद, नागार्जुन, रेणू से चल पडी

आंचलिक उपन्यास की धारा आज के आधुनिक लेखक रामदरशमिश्र, राजेंद्र अवस्थी, संजीव, कृष्णा सोबती, अलका सरावगी, कामतानाथ, विनोदकुमार शुक्ल, गोविन्द मिश्र, गरीराज किशोर, निर्मल वर्मा, मृदुला गर्ग और मैत्रेयी पुष्पा जैसे उपन्यास लेखकों ने 'आंचलिक उपन्यास' में स्थान निर्माण किया है। मैत्रेयी पुष्पा आज अग्रेसर लेखकों मे अपना स्थान निर्माण कर चुकी है। 'बुंदेलखण्ड क्षेत्र में पली-बढ़ी मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य की सामग्री ही 'बुंदेलखण्ड अँचल', वहाँ का लोकजीवन और नारी जीवन को बनाया है जिसके माध्यम से पूरे भारतीय ग्रामीण जीवन का लेखा-जोखा प्रस्तुत हो रहा है।

आँचलिक जीवन के विविध पहलुओं, समस्याओं, भौगोलिक परिवेश इत्यादि से निर्माण लोकजीवन, लोकसंस्कृति में स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने निर्माण की ग्रामीण सुधार विकास परियोजनाओं, पूँजीवादी विकास और जनतांत्रिक सामाजिक जागरण के दौर में संक्रमणशील गाँव, क्षेत्र का यथार्थ चित्रण मैत्रेयी पुष्पा के 'इदन्नमम' में प्रस्तुत होता है। 'अँचल' के सीमित क्षेत्र को संशिष्ट बिंब के रुप में चित्रित करते हुए बदलते ग्रामीण जीवन की विसंगतियों, अपेक्षाओं, मानसिक भटकाव, बिखराव से ग्रस्त मानव समाज में बढ़ती खाई का चित्रण 'इदन्नमम' में दृष्टव्य है। शोषक और शोषित, मालिक और मजदूर के रुप में मानव समाज का हुआ बटवारा 'इदन्नमम' की कथाभूमि है, जिसे मिटाने का कार्य उपन्यास की नायिका 'मंदा' के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए 'समूह का संघर्ष' 'सोनपुरा' गांव के माध्यम से यथार्थता के साथ प्रस्तुत करते हुए लेखिका मैत्रेयी पुष्पा ने सर्वहाराओं का संसार, आँखो देखी निम्नवर्ग की नरकीय दुनिया की यातनाओं को वाणी दी है। उपेक्षित वर्ग के प्रति सहानुभूति निर्माण करना मैत्रेयी का उद्देश नही है बल्कि उपेक्षित, शोषित वर्ग को अपने हक के लिए लढ़ने की प्रेरणा देनेवाली प्रगतीशील लेखिका के रुप में प्रस्तुत होती है।

ग्रामीण लोकजीवन को यथार्थ की भावभूमी पर चित्रित करनेवाली मैत्रेयी पुष्पा ने अपने समग्र साहित्य में भारतीय नारी जीवन के अब तक अछूत रहे सवालों को समाज के सामने रखा है। अब तक के नारी साहित्य में भारतीय स्त्री को परंपरा को स्वीकारते हुए जीवन को सुखी बनाने की सलाह प्राप्त होती दिखाई देती है । उसमें स्त्री को पुरुषप्रधान समाज में बंदिनी के रुप में प्रस्तुत किया था परंतु मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य के माध्यम

से आज के आधुनिक युग में स्त्री को अपने अधिकार को छीन लेने की हिमायद दी है। जीवन के प्रति नयी सोच, नया विचार जीवन के प्रति गहरी सोच और नारी जीवन का आमूलचूल संसार निडरता से प्रस्तुत करनेवाली मैत्रेयी स्वतंत्र व्यक्तित्व की 'दबंग' लेखिका है। हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न लेखिका के रुप में इनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व असाधारण है। इनका सारा साहित्य परंपरागत मान्यताओं, धारणाओं और नैतिकता के नियमों को नकारकर स्त्री जीवन की नई व्याख्या करने का अभिलाषी है। वैश्वीकीकरण के दौर में स्त्री एक वस्तु के रुप में प्रस्तुत हो रही है, वहाँ ग्रामीण स्त्री अपने अधिकार के लिये संघर्षरत है। उन्होंने ग्रामीण स्त्री जीवन की यातनाओं, पीड़ीओं को समाज के सामने प्रस्तुत करते हुए अपने व्यक्तित्व की रक्षा करते हुए आत्मनिर्भर, आर्थिक निर्भर होना, शिक्षा, सामाजिक जागृती, परिवेशगत जागृती के लिए सजग करना साहित्य का उद्देश रखा है। उनके अपने व्यक्तित्व के निर्माण में उनके 'बुंदेलखण्ड' अँचल का परिवेश, व्यक्तिविशेष और विधवा माँ 'कस्तुरी' से प्राप्त 'दबंग' व्यक्तिमत्व ने उन्हे आधुनिक लेखिकाओं मे अग्रणी स्थान प्राप्त करा दिया है।

अपने 'इदन्नमम' उपन्यास में नारी-विमर्श को ग्रामांचलिक कथा-विन्यास में प्रस्तुत करते हुए अपने समय का 'सच' बताते, जीवन और समय के 'सच' को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। इन्होने अपने वैयक्तिक जीवन में जो देखा, भोगा और परखा उसी को अपने जन्मभूमी बुंदेलखण्ड अँचल के ग्रामीण जीवन की सफल व्याख्या की है। संघर्षरत ग्रामीण लोकजीवन के साथ-साथ नारी जीवन संबंधी अनेक पहलूओं को समाज के सामने प्रस्तुत करते हुए दमित नारी को स्वर प्रदान किया है। मैत्रेयी पुष्पा खुद गाँव में पली-बढ़ी ग्रामीण परिवेश से रुब-रु है परिणामस्वरुप उनके उपन्यासों में 'बुंदेलखण्ड अंचल' विशेष को कथाओं में प्रश्रय मिला है। 'इदन्नमम' में 'अँचल' विशेष से संबंधित स्थिती, घटना, परिवेश, इतिहास को विषय बनाकर पुरे 'अँचल' का यथार्थ चित्रण 'इदन्नमम' में प्रस्तुत होता है। भारत भूमि के अछुते और अपरिचित विभिन्न प्रदेशों का लोकजीवन, लोकसंस्कृति को 'अँचल' विशेष के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए आँचलिकता का स्वरुप और आँचलिक उपन्यास धारा का विकास देखते हुए मैत्रेयी पुष्पा का 'इदन्नमम' आँचलिक उपन्यास की विशेषता का लेकर उभरता है।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय ग्रामजीवन में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिवर्तन हुआ परिणामस्वरुप ग्रामीण जीवन में परंपराओं, आस्थाओं, जीवनमूल्यों आदि में तेजी से विघटन की प्रक्रिया पनपने लगी। ग्राम व्यवस्था टूटकर बिखरने लगी और एक ओर पूँजीवादी, बाजारवादी संस्कृति का विकास होते हुए शोषण के पाटों मे पिसता हुआ भूमीहीन किसान, मजदूर, दलित नारी की व्यथा से भरा लोकजीवन और वहाँ के 'अँचल' के स्थानिक भौगोलिक परिस्थिती के परिणाम स्वरुप जिंदगी से जुझते मनुष्य जीवन का यथार्थ चित्रण अँचल विशेषता के साथ मैत्रेयी पुष्पा ने 'इदन्नमम' में चित्रित किया है। गरीब, मजदूर, भूमीहीन किसान के जीवन की यातनाओं का चित्रण करनेवाली मैत्रेयी मार्क्सवादी विचारों से प्रभावित है। इन्होने अपने 'इदन्नमम' उपन्यास में वर्गसंघर्ष का चित्रण करते हुए 'समूह संगठन' का महत्व प्रस्थापित करते हुए हक के लिए जागरुक भारतीय नागरिक का निर्माण हो यही इच्छा अपने साहित्य में व्यक्त की है।

'इदन्नमम' का कथानक बऊ, प्रेम और मंदा इन तीन पीढ़ियों के नेतृत्व करनेवाली स्त्रियों की कहानी है। अपने बेटे महेंदरसिंह की राजनीतिक हत्या और महेंदर की सुंदर जवान विधवा प्रेम का जीजा रतन यादव के साथ भाग जाना और जमीन जायदाद के लिए मुकदमा लड़ने से आतंकित बऊ का 'श्यामली' गाँव के पंचमसिंह के यहाँ नातिन 'मंदा' को लेकर पनाह पाना। 'श्यामली' गाँव के दादापंचमसिंह, चिफ अन्वर साहब और मोदी लल्ला के मैत्री के कारण 'राष्ट्रीय एकात्मता' का प्रतीक है, परंतु आजादी के बाद बदलते जीवनमूल्यों के परिणाम स्वरुप स्वार्थी बने इन्सान के कारण राजनीतीक, धार्मिक, पारिवारिक संदर्भ बदलते स्वरुप का शिकार उपरर्युक्त पात्र बन जाते, जिससे 'श्यामली' गाँव में अयोध्या के 'बाबरी मस्जिद' उध्दवस्त करने के परिणामस्वरुप गांव विघटीत हो जाता है। नाते-रिश्तों में दरार आकर 'बऊ' नातिन 'मंदा' को लेकर अपने गाँव 'सोनपुरा' लौटती है। हड़पनीति की शिकार बनी बऊ को मंदा 'रामायण' का पठन करते जीवन यापन संकट से उभारती है परंतु अपने गांव में स्टोन क्रैशर लगने से खानाबदोश बने ग्रामवासियों और स्टोन क्रैशर के ठेकेदारों के शोषण में पीसता आदिवासी मजदूर देखकर 'मंदा' अपने भूमी के लिए अपना जीवन समर्पित करने का 'संकल्प' उठाती है और अपने भूमी पर रोजी रोटी का हक ग्रामवासियों को प्राप्त करा देती है। वहाँ ग्राम सुधार की योजनाओं को लाने के लिए

राजनीतिक नेता 'राजासाब' को बाध्य करती है। गाँव में शिक्षा, स्कूल, अस्पताल, बिजली यह सुविधा होनी चाहिए यह अपना अधिकार है इस राजनीतिक चेतना से ग्रामवासियों को जागृत कर 'वोट' का महत्व प्रतिपादीत करती है। लेखिका ने अपने 'ओरछा' भूभाग के गुणावगुण, राजनीति हतकंडे, हड़पनीती, भ्रष्ट राजनीति और नौकरशहा, पूँजीवादी सेठ, साहूँकार, शोषित किसान मजदूर आदि का चित्रण करते हुए शोषण की भयावह स्थिती को प्रस्तुत करते हुए आज के संघर्षशील परिस्थिती में मार्क्सवादी विचारों की महत्ता प्रस्तुत करते हुए, अपने 'गणतंत्र' ने प्रदान किये 'वोट' का महत्व समझकर, संगठित होकर अपने अधिकार, हक को प्राप्त करते हुए, गांधीवादी आदर्श सामज की स्थापना करना, समय बोध और युगबोध की आवश्यकता के रुप में अपने विचार 'इदन्नमम' के माध्यम से प्रस्तुत किये है।

आधुनिकता बोध से जागृत मंदा, कुसुमा, प्रेम, सगुणा यह नारी पात्र अपने स्त्री जीवन के अधिकारों को प्राप्त करने के लिए संघर्षरत दिखाई देते है। 'मंदा' इस नायिका के माध्यम से आदर्श गाँव 'सोनपुरा' निर्माण के लिए अपने नीजी दुःख दर्द को त्यागकर गाँव के विकास 'यज्ञ' मे अपना जीवन स्वाहाः करते हुए 'इदन्नमम' का मूलमंत्र अपनाकर, अपने भूमी के लिए जीवन समर्पित करती है। प्रेम, कुसुमा भाभी यह नारी पात्र परंपरा के विरुध्द जाकर शारिरीक इच्छाओं की पूर्ति के लिए समाज, परिवार से झगड़ती दिखाई देती है। 'बऊ' परंपरावादी विचार की होकर ही अपने नातिन 'मंदा' के कार्य को सहकार्य करती है। नारी अपने अधिकार के लिए सजग रहे वह नेतृत्व स्वीकार कर ले तो अपने गाँव, समाज में परिवर्तन ला सकती है। उसके आत्मनिर्भर, आर्थिक निर्भर और नेतृत्व को प्रेरणा देना यही 'मंदा' इस नायिका के माध्यम से नयी प्रेरणा प्रदान की है। मैत्रेयी पुष्पा ने स्त्री की समानता और सशक्तीकरण के विचार व्यक्त करते हुए 'स्त्री' को ही लोकशक्ति के रुप मे खड़ा करते हुए उसके हाथ में राजनीतिक सत्ता होना अनिवार्य माना है जिससे विराट जनसमूह में अखंड विश्वास निर्माण करते हुए सशक्त समाज का निर्माण हो । साथ ही बालविवाह, दहेज प्रथा, विधवा समस्या, नारी शोषण, बलात्कार, नारी विक्रय, अशिक्षा के विरुध्द नारी जागरण का स्वर आलापा है।

दादा पंचमसिंह, टीकमसिंह जैसे बुजुर्ग पात्रों के माध्यम से आदर्श 'रामराज्य' की

निर्मिती का स्वप्न पुरा करने के लिए संगठन, जातिनिर्मूलन, धार्मिक, सांप्रदायिक एकता का महत्व प्रतिपादीत करते हुए नवयुवकों के हाथ में सत्ता का दंड देकर मकरंद, डॉ. इन्द्रनील जैसे पात्रों के माध्यम से देश के लिए समाजसेवी वृत्ती के नवयुवकों की आवश्यकता को दर्ज किया है। 'इदन्नमम' के सारे पात्रों की निर्मिती मैत्रेयी पुष्पा ने अपने समय की स्थिती और समय को परिवर्तीत करने के उद्देश से करते हुए एक खुशहाल भारत के निर्मिती का ख़्वाब देखा है।

भाषिक संरचना की दृष्टि से अपने 'अँचल' की बोली भाषा 'बुंदेलीभाषा' से उपन्यास सराबोर है। 'अँचल' क्षेत्र के यथार्थ जीवन कहानी को भरोसेमंद बनाने में 'बुंदेलभाषा' सार्थक बनी है। बऊ, दादापंचमसिंह और गाँव के लोगों के संवादों से 'बुंदेलखण्डी' भाषा की मधुरता और मुहाँवरे, कहावतों, सुक्तियों से संपन्न शब्द भंडार का परिचय होता है। शिक्षित पात्रों में सभ्यता का प्रयोग किया है तो अंग्रेजी भाषा के गँवई अंचल में बदलते शब्द रुपों के प्रयोग से बदलते समाजजीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत होता है। पुरा कथा शिल्प अभिधा शब्द शैली में प्रस्तुत करते हुए लेखिका ने पाठक को सहजता प्रदान की है जिससे पाठक कथाभूमि से अलग नही हो पाता। सांस्कृतिक परिवेश को स्पष्ट करते हुए 'रामायण' की 'अवधी' बोलीभाषा की सहजता से धार्मिक प्रभाव को दृष्टिगोचर करती है। जगह-जगह आँचलिक उपन्यास के शिल्पविधान के विशिष्ट उपकरणों जैसे-लोकगीत, पर्व-त्यौहार, कहाँवते, मुहाँवरे, रीति -रिवाज, परंपराओं के यथार्थ चित्रण से उपन्यास का कथाशिल्प संपन्न बना है जिसके माध्यम से मैत्रेयी पुष्पा का अपने भूमि से लगाव, प्रेम व्यक्त होता है। गाँव जीवन के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक संदर्भ एक-दूसरे से टकराते हुए स्थानीक परिवेशगत विशेषताओं को उजागर करने के लिए चित्रात्मक, बिम्बात्मक, वर्णनात्मक, कथात्मक शैली का प्रयोग करते हुए बुंदेलखण्ड मानवीय समाज और परिवेशगत विशेषताओं को जीवंत करने में मैत्रेयी पुष्पा सफल बनी है। जो हमे 'रेणू' के 'मैलाअंचल' और 'परती- परिकथा' की याद करा देते है।

इस तरह मैत्रेयी पुष्पा ने अपने 'बुंदेलखण्ड' अँचल के बदलते मानवीय जीवन संदर्भ का यर्थाथता से चित्रण करते समय खेत-खलिहान, नदियों-पहाडियों, वन-कंदारोओं, गढ़ी-किल्लों के बीच गुजर-बसर करनेवाली लोकजीवन से पाठक कों परिचित कराते हुए स्त्री

और पारंपारिक भारतीय समाज, आजादी और विकास योजनाओं, ग्रामीण विकास और बदलते गाँव को प्रस्तुत करते हुए, इस उपन्यास के द्वारा 'संगठन' का महत्व और 'स्त्री शक्ती' का परिचय करा दिया है।

मैत्रेयी पुष्पा के 'आँचलिक साहित्य' को देखते हुए इस विषय के साथ-साथ 'आँचलिक जीवन के बदलते मानवीय मूल्य', 'मूल्य संक्रमण', 'आँचलिक स्त्री का बदलता जीवन', और 'आँचलिक उपन्यासों मे शोषक-शोषित, वर्ग संघर्ष का चित्रण' इस प्रकार के विषयों को लेकर भी अनुसंधान का प्रावधान उपलब्ध हो सकता है। जो मैत्रेयी पुष्पा को हिंदी साहित्य जगत् में एक सशक्त लेखिका का स्थान प्राप्त करा देता है।